अपना स्वरूप

हमारे जीवन में कुछ अनुभव ऐसे होते है जिनको हम साधारण बुद्धि के द्वारा यदि समझने का प्रयास करते है तो वे अनुभव हमे समझ आने के बजाय हमारे मन पर उल्टा प्रतिघात करते है, लेकिन जब हमारी समझ एक स्तर के ऊपर चली जाती है तो हमें स्वंत ही जीवन का हर एक अनुभव रोमान्चित कर देता है।

जटिलता तथा विविधता पूर्ण जगत तथा मनुष्य देह को देखकर हमारे मन में कुछ प्रश्नों का उठना स्वभाविक है। जैसे, हम कौन हैं? इस जगत के साथ हमारा क्या सम्बन्ध है? हमारा स्वरूप (Intrinsic nature) क्या है? इत्यादि। कई बार जब हमें इन प्रश्नों का सही उत्तर नहीं मिलता तो मन संसार में इधर–उधर भटकता रहता है, हम कभी किसी आश्रम में जाते हैं या फिर किसी मन्दिर में, परन्तु फिर भी हममें से कुछ ही लोगों को इस जीव, जगत तथा ईश्वर के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान हो पाता है, यह पुस्तक एक प्रयास है आध्यात्म से जुड़े कुछ पहलुओं को समझाने के लिए, क्योंकि परेशानी बाहर कहीं नहीं है, परेशानी हमारी समझदारी में है। जिस दिन हमने जीवन को समझदारी से जीना सीख लिया, उस दिन ये प्रश्न हमेशा के लिए शान्त हो जायेगें।

लेखक से संपर्क के लिए :
✉ramesh_bio2006@rediffmail.com

EDUCREATION
PUBLISHING
www.educreation.in

अपना स्वरूप

डॉ रमेश सिंह पाल

Also available as an eBook
NON-FICTION
ISBN 978-93-88381-36-9
9 789388 381369 >

अपना स्वरूप

डॉ रमेश सिंह पाल